जीवन का मार्ग

मार्च - अप्रैल 2012 वर्ष - 2, अंक - 11

विषय वस्तु

संपादकीय ---------- 1
परम्पराएँ और प्रथाएँ ---------- 2
छुड़ौती-परमेश्वर का उत्तम तोहफा ---------- 5
धनी व्यक्ति और अनन्त जीवन ---------- 7
बाइबल की माताएँ - 2 ---------- 9
What is the Meaning of cross ---------- 12
बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 11 ---------- 14
शब्द पहेली ---------- 16
मूसा ---------- 17

मसीही विश्वासियों की आत्मिक उन्नति एवं वचन में बढ़ती के उद्देश्य से प्रकाशित एवं प्रसारित अर्न्तसामुदायिक द्विमासिक पत्रिका

पत्र व्यवहार के लिये पता
जीवन का मार्ग
पोस्ट बॉक्स् न. - 27,
बिलासपुर - 495 001, छ.ग.

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 9 का उत्तर

1. 1:1
2. 2:4
3. 23:1
4. 24:2
5. 11:21
6. 24:15
7. 8:26
8. 5:13
9. 6 वां अध्याय
10. 3: 15

संपादकीय

पलिस्तीन का वह छोटा सा देश! हाँ, दुनिया के मानचित्र के केंद्र में स्थित इस्राएल देश। इस्राएल देश को परमेश्वर ने चुना था...अपनी एक विशेष योजना पूरी करने के लिये।

जब से आदम और हव्वा ने पाप कर परमेश्वर की संगति से अलग हो गये थे तब से वह उन्हे वापस फेर लाना चाहता था। यूहन्ना ३:१६ में परमेश्वर का वचन कहता है कि परमेश्वर मनुष्यों से बहुत प्यार करता है। इतना प्यार कि वह उन्हे नाश होते, संसार में बिन चरवाहे की भेड़ों जैसे भटकते नहीं देख सकता था। हाँ प्रियों, इसी कारण परमेश्वर मनुष्य का रूप धारण कर हमारे संसार में आया...ताकि वह हमारे बदले में पाप का दंड उठा सके। और हमें पाप के श्राप से स्वतंत्र कर सके।

क्या इस दु-खभोग सप्ताह में आप परमेश्वर के प्रेम का प्रत्युत्तर देंगे? निर्णय आपका है...। सफर भी आपका ही है...। और अपनी मंजिल का चुनाव आप को ही करना है।

प्रभु की सेवा में

संपादक

परम्पराएँ और प्रथाएँ

साजु जे. मैथ्यू

दो मुख्य शक्तियाँ हमें नम्रता के साथ वचन ग्रहण करने से रोकती हैं। वे परम्पराएँ और प्रथाएँ हैं। एक दूसरे से संबन्धित होने पर भी ये दोनों अलग-अलग हैं। परंपरा वह आत्मबोध है जो एक व्यक्ति में जन्मजात् आता है, प्रथाएँ वे हैं जो हमारे पूर्वजों द्वारा प्रारंभ किए गए।

परंपरा में एक व्यक्ति के जीवन में गलत या सही रीति से हस्तक्षेप करने की शक्ति होती है। परंपरा के विषय में परिपक्व स्मरण और ज्ञान उस व्यक्ति को संस्कारवान और विशाल हृदय वाला बनाता है। कई बार किसी व्यक्ति के अच्छे व्यवहार - अतिथि सत्कार आदि की प्रशँसा करने के लिये हम कहते हैं कि यही उसकी परंपरा है।

किन्तु परंपरा के विषय में गलत विचार किसी व्यक्ति को मूढ़ या अहंकारी बना देता है। पैतृक विचार उसे विशालता की ओर नहीं परन्तु संकुचित दशा की ओर ले जाता है। ऐसे लोगों द्वारा मूर्खता के कार्य होने पर हम कहते हैं, उससे तो हम यही उम्मीद कर सकते हें। यही उसकी परंपरा है।

परंपरा केवल जीन से प्राप्त नहीं होता है। वह बचपन से ही जिन कहानियों को सुनता रहता है और उसके जीवन में समाज का जो स्थान होता है, वह उसके परंपरागत विचारों को बढ़ाता है। इस प्रकार उसे आभास होता है कि उसका समाज अन्य समाजों से अलग है। यही उसकी स्वयं की पहचान को विकसित भी करता है।

प्रत्येक समाज की अपनी विशेषताएँ होंगी। किन्तु समस्या तब प्रारंभ होती है जब यह विचार मन में अपना फन उठाने लगता है कि मेरा समाज अन्य समाजों से श्रेष्ठ है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि इन विचारों की बेलगाम बढ़ोत्तरी उसे इस सोच तक पहुँचा देता है कि मेरा समाज हर दृष्टि से सम्पूर्ण है।

यह दयनीय बात है कि कई बार परंपरागत विचार मनुष्य को परिपक्वता देने के बजाय नकली पहचान देता है। ऐसे लोगों का विचार होता है कि वे एक संपूर्ण समाज का भाग

हैं इसलिये दूसरों को उनसे सीखना चाहिए, उन्हे दूसरों से कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं है। वे ज्ञान पाने के लिए के लिये अपने मर मिटे पितरों की ओर ही देखते हैं।

यहूदी की समस्या भी यही थी। यहूदी जो स्वयं को सम्पूर्ण व्यवस्था और आत्मिकता का ठेकेदार समझता था, उसके लिये यीशु के वचन सुनने योग्य नहीं थे।

तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उसकी प्रतीति की थी, कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा" (यूहन्ना 8:31,32)।

यह सुन कर यहूदियों को क्रोध आ गया। यह तू क्या कह रहा है? तू ने क्या सोचा, क्या हम गुलाम हैं? हम अब्राहम की सन्तान हैं। आज तक हम किसी के गुलाम नहीं रहे हैं। फिर तेरे यह कहने का क्या अर्थ है कि हम स्वतन्त्र होंगे?

यह इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण है कि परंपरा किस प्रकार किसी व्यक्ति को अन्धा बनाता है। यहूदी कहते हैं कि हम कभी किसी के अधीन नहीं रहे हैं। किन्तु वास्तविकता क्या है? वे मिश्र में गुलाम थे। बाद में वे बाबुल के आधीन हुए। मादियों और फारसियों ने उन्हें गुलाम बनाया। तत् पश्चात् यूनान और सीरिया ने उन्हें गुलाम बनाया और अभी जब वे कहते हैं कि हम कभी किसी के गुलाम नहीं रहे तब भी वे रोम के अधीन हैं। कहने वाले यहूदी और सुनने वाला यीशु दोनों जानते हैं कि वे गुलाम हैं। फिर भी यहूदी निर्लजता से स्वतन्त्र होने का ढ़ोंग करते हैं। शराब के नशे में धुत्त नाली में पड़ा व्यक्ति मानों कह रहा हो, दो बोतल और पीने के बाद भी मैं सीधे ही चलूँगा।

गुलाम होने के बावजूद उन्हे इस बात पर गर्व है कि वे अब्राहम की सन्तान हैं। एक यहूदी के लिये अब्राहम की सन्तान होने से बढ़कर कुछ भी नहीं है। हर एक यहूदी यह सोचता था कि अब्राहम की सन्तान होने के कारण वे सुरक्षित और स्वतंत्र रहेंगे। वास्तविकता की भयावहता को वे देखने से वंचित रख कर एक पूरी जाति को बंधन में रखने वाली परंपरा की शक्ति कितनी खतरनाक है!! मुक्ति का सन्देश लेकर आनेवाले उद्धारकर्त्ता से यदि गुलाम कहे कि वह गुलाम है ही नहीं स्थिति कैसी होगी? जब वचन स्वतंत्रता का मंत्र लेकर यहूदी के पास पहुँचा तो परंपरा के चक्रव्यूह में फँसा यहूदी कहता है, हमें इस वचन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम गुलाम नहीं हैं ही नहीं।

अब्राहम की परंपरा का बखान करनेवाले यहूदियों से यीशु पुनः बात करता है।

"तुम्हारी बात ठीक हो सकती है। तुम अब्राहम ही की सन्तान हो, परन्तु तुम क्यों मेरे वचनों पर ध्यान नहीं देते? मैं केवल वही बातें कहता हूँ जो मैं ने पिता के पास से सुना है। जो पिता से सुना है, क्या उसे तुम्हें करना नहीं है? (यूहन्ना 8:38)।"

उनकी बातें ध्यान देने योग्य हैं। "तेरी बातें हमें समझ में नहीं आती है। हम केवल इतना ही जानते हैं कि हम अब्राहम की सन्तान हैं" (यूहन्ना 8:39)।

देखिए परंपरा ने कैसी मुसीबत पैदा कर दी है। स्वतंत्रता के वचन वे सुनना नहीं चाहते हैं (वे जब इस सच्चाई को मानते ही नहीं हैं कि वे बंधनस्थ हैं तो स्वतंत्रता के वचन की उन्हें क्या आवश्यकता है)। वे केवल इस सच्चाई को जानते हैं कि वे अब्राहम की सन्तान हैं। परंपरा के अलावा कुछ भी उनके लिये वास्तविक नहीं है।

अन्त में यीशु कहता है, "यदि तुम अब्राहम की सन्तान हो तो इसे प्रमाणित करो। परंपरा बातों से नहीं कार्यों से प्रमाणित होना चाहिए। अब्राहम की सन्तानों को अब्राहम के से काम करने चाहिए।"

अब्राहम ने कौन से काम किए थे? अब्राहम ने परमेश्वर का सन्देश - सन्तान की प्रतिज्ञा - लेकर आनेवाले दूतों का आदर-सत्कार किया (उत्पत्ति 18:1-8)। यीशु कहता है कि उसके वचन मानवीय नहीं है और वह केवल वही बातें कहता है जो उसने पिता के निकट देखा है (यूहन्ना 8:38, 40)। दूसरे शब्दों में कहे तों यीशु भी परमेश्वर का सन्देशवाहक है। फिर भी अब्राहम की सन्तान परमेश्वर का सन्देश लेकर आनेवाले यीशु का (जैसे अब्राहम ने किया) आतिथ्य सत्कार नहीं करते हैं, उसे मारने का प्रयास कर रहे हैं। कारण, परंपराओं द्वारा उन्हे दिये जाने वाले मिथ्या धारणाएँ ही हैं।

यूहन्ना का सुसमाचार आठवाँ अध्याय पढ़ने पर हम पाते हैं कि अधिकांश भाग में वे अब्राहम का नाम लेकर यीशु के वचनों का तिरस्कार करते हैं। 33 से 40 तक के पदों पर ध्यान दीजिए।

अब्राहम के सन्तान होने का भाव उनमें गलत रीति से कार्य करता है। अब्राहम की सन्तान होने के बावजूद वे उसके समान जीने की इच्छा नहीं करते हैं बल्कि परंपरा की अच्छी बातों को छोड़ कर वे उसकी सतही बातों को ग्रहण कर रहे हैं।

आगे हम देखते हैं अब्राहम की सन्तान होने का तीव्र भाव उन्हे एक दूसरे ही स्तर पर ले जाता है -अब वे यह सोचते हैं कि कोई अब्राहम से बड़ा हो ही नहीं सकता है।

शेष पृष्ठ 10 पर...

छुड़ौती
परमेश्वर का उत्तम तोहफा

शिमोन खालखो, बिलासपुर (छ० ग०)

सबसे अनमोल तोहफा कौन सा है? किसी तोहफे का महंगा होना उसकी अहमियत नहीं बढ़ा देता क्योंकि उसकी असल कीमत पैसों से नहीं आँकी जा सकती। इसके बजाय वही तोहफा आपके लिये अनमोल होगा जो आपको सच्ची ख़ुशी दे और आपकी जिन्दगी की किसी अहम जरूरत को पूरा करे। परन्तु एक ऐसा भी एक तोहफा है जिसका मुकाबला दुनियां के तमाम कीमती तोहफे साथ मिलकर भी नहीं कर सकते यह वह तोहफा है जो परमेश्वर ने सारे मनुष्यों को दिया है। वैसे तो परमेश्वर ने हमें बहुत कुछ दिया है, परन्तु उसका दिया सबसे अनमोल तोहफा उसके बेटे यीशु मसीह का छुड़ौती बलिदान (मत्ती *20:28*) बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे यही तोहफा हमें ख़ुशियों से भर सकता है। यीशु ही हमारे जरूरत को पूरा कर सकता है। यीशु के बलिदान से पता चलता है कि परमेश्वर मनुष्यों से कितना प्यार करता है यह सबसे बड़ा सबूत है।

छुड़ौती क्या है?

सीधे शब्दों में कहें तो छुड़ौती यहोवा का इंतजाम है, जिससे वह इंसानों की पाप और मौत से छुटकारा दिलाता है। इफिसियों *1:7* में इस प्रकार लिखा है, हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन अनुसार मिला है। इसे समझने के लिये हमें याद करना होगा अदन के बाग में क्या हुआ? आदम ने पाप किया और अपना असली जीवन गवाँया था तभी हम जान पायेंगे कि छुड़ौती हमारे लिये क्यों अनमोल तोहफा है, जब परमेश्वर ने आदम को रचा तो आदम को सिद्ध जीवन दिया था। आदम के लिये वह जीवन वाकई एक अनमोल वरदान था। ध्यान दीजिये, उसके पास सिद्ध शरीर और उत्तम मस्तिष्क था। वह कभी बीमार नहीं होता, न बूढ़ा होता, और न कभी मरता, यही नहीं, सिद्ध इन्सान होने की वजह से परमेश्वर का आदम से एक ख़ास नाता था। लूका *3:38* बताता है कि वह क्या नाता था-यह पिता और पुत्र का नाता था। यहोवा अपनी उस संतान से बातें किया करता था। एक पिता अपने बेटे से क्या उमीद करता है, कि वह अच्छे रहे, अच्छा काम करे, उसकी आज्ञाओं का पालन करे, परन्तु आदम ने

परमेश्वर के आज्ञा का पालन नहीं किया। उत्पत्ति *2:16-17,* भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उस दिन अवश्य मर जाएगा। तभी से आदम के जीवन में पाप का जन्म हुआ। उसी दिन से मनुष्यों को पापों की छुड़ौती की आवश्यकता हो गया। इसलिये जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई इसलिये कि सबने पाप किया (रोमियों *5:12*)। छुड़ौती का अर्थ है, मुआवजा देना या नुकसान की भरपाई के लिये दिया जाने वाला दाम। यहोवा ने नुकसान की भरपाई कैसे किया? यहोवा ने एक छुड़ौती देकर यह सब कैसे मुमकिन किया?

छुड़ौती का इंतजाम कैसे किया

आदम ने अपना सिद्ध जीवन गवांया था। उसको कोई भी असिद्ध व्यक्ति के जीवन को देकर नहीं खरीदा जा सकता था। जरूरत थी तो एक सिद्ध मनुष्य की जो कि सब मनुष्यों की छुड़ौती दे सकता है। बाइबल बताती है, प्राण के बदले प्राण लिया जाए (व्यवस्थाविवरण *19:21*)। आदम ने सिद्ध इन्सानी जीवन खो दिया था। उसकी जीवन की बराबरी कैसे हो सकता था उसके बदले में और एक सिद्ध जीवन ही उसे सिद्ध बना सकता था। हमकों पापों से छुड़ाने के लिये परमेश्वर ने इस प्रकार इंतजाम किया। उसने स्वर्ग से अपना एक सिद्ध आत्मिक बेटा भेजा जो धरती पर सिद्ध इन्सान बन कर पैदा हुआ। यहोवा अपना एकलौता बेटा जिससे बहुत प्यार करता था उसे पापियों को छुड़ाने के लिये धरती पर भेज दिया और यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर खुशी-खुशी धरती पर आ गया। अपने आपको शुन्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य कि समानता में हो गया (फिलिप्पियों *2:7*)। बाइबल बताती है, प्रथम मनुष्य अर्थात आदम जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम जीवनदायक आत्मा बना (*1* कुरिन्थियों *15:45*)। एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे (रोमियों *5:19*)। यीशु जो हमारी छुड़ौती के लिये क्या क्या तकलीफें और जुल्म सहने पड़े, बेरहमी से कोड़े बरसाये गए, उसके हाथों में और पैरों में कीले ठोके गये, और सूली पर लटका दिया गया जहाँ उसने तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया ताकि सभी लोग छुड़ाये जाएं। परमेश्वरे ने अपने सबसे प्यारे बेटे की उस जबरदस्त बफादारी को देखकर उसके दिल में कितना खुश हुआ होगा। परमेश्वर अपने सिद्ध और निरुपाय बेटे यीशु को सूली पर कुर्बान होने को दे दिया। इस तरह यीशु ने एक ही बार सदा के लिये अपना सिद्ध इंसानी जीवन बलिदान कर दिया। एक ही बार बलिदान होने से हम पवित्र किये गये हैं (इब्रानियों *10:10*)।

धनी व्यक्ति और अनन्त जीवन

ए. जे. अब्राहम, बिलासपुर

(गतांक से आगे)

शिष्यत्व के मूल्य को कम आंकना

वह यीशु को गुरू कहकर सम्बोधित करता है। हमारे देश की परंपरा में हम गुरू शिष्य के संबन्ध को अच्छी तरह जानते हैं। एकलव्य ने द्रोणाचार्य की प्रतिमा को सामने रखकर धनुष-वाण चलाना सीखा। उसके बाद जब वे उससे गुरू दक्षिणा के रूप में उसका अँगूठा माँगते हैं, तब वह सहर्ष उनकी माँग पूरा करता है।

यीशु ने इस व्यक्ति से केवल इतना कहा था कि अपना सबकुछ बेचकर कंगालों को दे दे। लेकिन वह इस बात के लिये तैयार नहीं होता है। वह वहां से लौट जाता है, उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है, और वह शोक करता हुआ चला जाता है 'क्योंकि' वह बहुत धनी था। यीशु ने जो उसे करने के लिये कहा, वह उसे कर सकता था, लेकिन वह इसके लिये तैयार नहीं होता है। यीशु ने एक ही दक्षिणा मांगी थी और वह था आज्ञापालन। वह यीशु को गुरू तो कहता है, लेकिन शिष्यत्व का मूल्य देना नहीं चाहता है। उसने शिष्यत्व के मूल्य को कम करके आंका। और यह उसकी तीसरी कमी थी जिसके कारण दौड़ते हुये आने के बावजूद भी,... बड़े उत्साह के साथ आने के बावजूद भी उसे शोक करता हुआ यीशु के पास से जाना पड़ा।

यीशु के पीछे चलने के लिये वह हमसे एक ही मूल्य की मांग करता है। यीशु का शिष्य होने के लिये केवल एक ही मूल्य है और वह है आज्ञापालन। यदि हम यीशु को अपने जीवन का स्वामी स्वीकार करते हैं; यदि हम उसे अपने जीवन का प्रभु ग्रहण करते हैं, तो वह हमसे केवल आज्ञापालन चाहता है। वह किसी और प्रकार का बलिदान हमसे नहीं चाहता है, केवल आज्ञापालन चाहता है।

प्रभु की आज्ञाएँ हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। दाऊद के विषय में यदि आप देखें, तो दाऊद भजनसंहिता 119 में कई बार यह बताता है कि परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके जीवन में क्या स्थान रखती हैं। किस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके जीवन में

दिखाती हैं। किस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके जीवन में प्रकाशन देती हैं। किस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके जीवन में उसे पाप करने से रोकतीं हैं, बहुत सी बातें हम उसके जीवन में देखते हैं। यह जवान ऐसा कुछ भी करना नहीं चाहता है। वह गुरू तो कहता है, लेकिन आज्ञापालन नहीं करना चाहता है। हमारा प्रभु केवल एक ही मूल्य चाहता है और वह है आज्ञापालन। यदि हम उसे गुरू कहते हैं,... उसे अपने जीवन का स्वामी कहते हैं तो वह हमसे एक ही बात चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें।

एक गुरू शिष्य से केवल आज्ञापालन चाहता है। अगर उसने यीशु को प्रभु नहीं माना, अगर उसने यीशु को गुरू का स्थान दिया तब भी उसे यीशु की आज्ञा का पालन करना चाहिये था। यीशु ने उससे कहा, कि अपने संपत्ति को बेचकर कंगालों वह दे। लेकिन वह ऐसा करने के लिये तैयार नहीं होता है, वह शोक करके चला जाता है।

आज संसार में बहुत से लोग हैं जो सब कुछ पाना तो चाहते हैं; परमेश्वर से हर आशीष को पाना चाहते हैं, लेकिन परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना नहीं चाहते हैं। वे मूल्य चुकाने के लिये तैयार नहीं होते हैं। वे सबकुछ यों हीं पा लेना चाहते हैं। वे यीशु को संपूर्ण रीति से समझते नहीं हैं कि यीशु को अपने जीवन में उसका स्थान नहीं देते हैं।

इस घटना में हम कई सकारात्मक बातें हैं। उसका दौड़ता हुआ आना....यीशु के सामने घुटने टेकना.... और तो और वह यीशु से एक अति गंभीर प्रश्न करना...। जो आज के जवान बहुत कम ही करते हैं। इतना सब होने के बाद भी वह यीशु मसीह के पास से उदास होकर जाता है। केवल इसलिये कि उसने यीशु मसीह को वह स्थान नहीं दिया जो स्थान यीशु मसीह का होना चाहिये। जीवन की अच्छी और सकारात्मक बातें हमें अनंत जीवन नहीं दे सकती हैं। इसके लिए हमें यीशु को अपने जीवन का प्रभु बनाना होगा। आईये, अपने जीवन में यीशु को सही स्थान दें जो उसका होना चाहिये।

परमेश्वर सहायता करे कि हम यीशु को पहचानें। यीशु हमारे जीवन में स्वामी का स्थान प्राप्त करे। यीशु हमारे जीवन में गुरू का नहीं बल्कि मालिक का स्थान प्राप्त करे। यीशु हमारे जीवन केवल कुछ सलाह देने के लिये नहीं आता है, यीशु हमारे जीवन में प्रभुता करने के लिये आता है। यदि हम यीशु के पीछे चलना चाहते हैं तो निश्चय ही हमें मूल्य चुकाना होगा और वह मूल्य है आज्ञापालन। वह हमसे केवल आज्ञापालन का बलिदान चाहता है। परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

बाइबल की माताएँ - 2

राहेल और एक अनाम माता

यूसुफ और बिन्यामीन की माँ राहेल, इतिहास की पहली स्त्री थी जिसने शिशु जन्म के समय जीवन को अलविदा कहा था। बिन्यामीन के जन्म के समय राहेल की मृत्यु हो गई थी। बहुत वर्षों तक परमेश्वर ने राहेल की कोख बन्द कर रखी थी। जिस कारण उसने अपनी दासी बिल्हा का विवाह अपने पति से कर दिया ताकि उसके द्वारा सन्तान उत्पन्न हो। बिल्हा का जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम दान रखा गया। आगे चल कर राहेल भी गर्भवती हुई और यूसुफ उसकी प्रथम सन्तान था। जब याकूब अपने परिवार को लेकर वापस परमेश्वर की आज्ञानुसार बेतेल जा रहा था तब एप्राता के पहुँच कर राहेल को पीड़ा उठने लगी और उसने प्राण निकलते निकलते बिन्यामीन को जन्म दिया था। बिन्यामीन याकूब का सबसे छोटा और प्रिय पुत्र था। बिन्यामीन ने अपनी माँ के विषय में बहुत सी बातें सुनी होगी क्योंकि उसका पिता याकूब राहेल से बहुत अधिक प्यार करता था।

दूसरी स्त्री जिसने शिशु के जन्म के समय मृत्यु को गले लगा लिया था वह एक अनाम माँ थी जिसका वर्णन संक्षिप्त रूप में 1 शमूएल 4:19-22 में किया गया है। यह स्त्री एली के पुत्र पीनहास की पत्नी थी। पीनहास युद्ध करते करते अपने भाई होप्नी के साथ मारा गया था। जब उनके पिता एली ने अपने पुत्रों की मृत्यु और सन्दूक के छीन जाने का समाचार सुना, तब वह भी कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा और गर्दन टूटने के कारण मर गया था। जब इस स्त्री ने अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसे प्रसव पीड़ा उठी और उसने एक शिशु को जन्म दिया। वह एक ऐसी माता का प्रतीक भी है जो आशाहीनता के अन्धकार में डूब जाती है। उसने अपनी सन्तान का नाम यह कह कर इकाबोद रखा कि इस्राएल से महिमा चली गई है।

...परम्पराएँ और प्रथाएँ

वचन - जीवन का वचन - लेकर यीशु पुनः यहूदियों के पास जाता है। यीशु कहता है कि, "मेरे वचनों को माननेवाला कभी मृत्यु को नहीं देखेगा" (यूहन्ना 8:51)। लोगों का कहना था कि यीशु में दुष्टात्मा है। क्योंकि अब्राहम और भविष्यद्धक्ता लोग मर गए तो फिर यीशु के वचनों को माननेवाला अमर कैसे हो सकता है? तू अपने बारे में क्या सोचता है? क्या तू हमारे पिता अब्राहम से बड़ा है? अब्राहम तो मर गया, भविष्यद्धक्ता भी मर गए। फिर तेरी बातें कैसे पूरी होंगी?" उन्होंने पूछा (यूहन्ना 8:52, 53)।

आज भी हमारे जीवन में प्रभु के वचन को जो स्थान मिलना चाहिए उसे परंपराओं ने हथिया रखा है। इस प्रकार कई लोग प्रभु को 'मारना' चाहते हैं। (यूहन्ना 8:37)। हो सकता है हम यहूदियों के समान यीशु को वास्तव में मारना नहीं चाहते हों, फिर भी जब हम अपने में मसीह को बढ़ने की अनुमति नहीं देते हैं तो हम उसे मारने का ही प्रयास करते हैं। जब तक प्रभु के वचन को हममें स्थान नहीं है, तब तक मसीह हममें मरता है।

इस बात पर विचार करें कि आधुनिक युग में परंपरा हमें किस प्रकार वचन से अलग करती है। यहूदियों की गलतियों को हम भी दोहराते हैं। जिस प्रकार यहूदियों के लिये अब्राहम मूरत था उसी प्रकार हमारे लिये भी कलीसिया में कई मूर्तियाँ हो सकतीं हैं। हो सकता है हमारी कलीसियाओं के वे संस्थापकगण जो मर मिटे : अथवा कुछ जीवित अगुवे! मानों उनमें से कईयों के विषय में हम यह सोच बैठे हैं कि वे कभी गलत नहीं हो सकते। इसलिये वचन की सच्चाई प्रगट होने के पश्चात् भी हम उस पर ध्यान देने का प्रयास नहीं करते हैं। "हमारे पिताओं ने ऐसा किया, वैसा किया!" जैसे शब्दों पर लटक कर हम हो हल्ला मचाएंगे। जब यहूदी लोग अब्राहम को पिता कहकर पूजते थे तब भी वे अब्राहम के जीवन का अनुकरण करने के लिये तैयार नहीं होते थे। उसी प्रकार आधुनिक समय में भी 'हमारी कलीसिया', 'हमारे पितर' जैसी बातें कहकर परंपराओं की प्रशंसा करने के अलावा वास्तव में पितरों के विश्वास या उनके जीवन का अनुकरण करने वाले विरले ही होते हैं और यही वास्तविकता है।

आज कई लोगों का परंपराओं पर विश्वास, जॉन की विश्वास घोषणा के समान ही होता है। किसी सज्जन व्यक्ति ने एक बार जॉन से पूछा, "जॉन, आपकी कलीसिया का विश्वास क्या है?"

जॉन को मालूम नहीं था कि अपने विश्वास का वर्णन कैसे किया जाए। इसलिये उसने कहा, "वह तो....। मेरा विश्वास ही मेरी कलीसिया का भी विश्वास है।"

"अच्छा, ऐसी बात है, तो आपका विश्वास क्या है?" उन्होंने पूछा।

"वह तो... मेरी कलीसिया का विश्वास ही मेरा भी विश्वास है।" जॉन ने हिचकिचाते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, तो ऐसी बात है। तो जॉन और जॉन की कलीसिया का विश्वास क्या है?" उस सज्जन ने फिर पूछा।

"वह दोनों एक ही है सर," जॉन ने बुद्धिमानी पूर्वक कहा।

केवल यही नहीं कि जॉन अपने विश्वास को नहीं जानता है, बल्कि वह यह भी नहीं जानता है कि उसकी कलीसिया का विश्वास क्या है। फिर भी वह परंपरागत विश्वास पर घमण्ड करता है।

इसी प्रकार जब जब परमेश्वर हमें एक नया पाठ सिखाने का प्रयास करता है, तब तब परंपरा बाधक बनकर बीच में आ खड़ी होती है। हमें एक बात स्मरण करना है, हमारे पितामहों से गलतियाँ हो सकती है। केवल परमेश्वर और उसके वचन से गलती नहीं हो सकती है।

केवल यहूदी ही नहीं, सामरी भी परंपराओं की गलत अवधारणाओं के द्वारा वचन के लिये बाधक बन रहे थे। यीशु और सामरी स्त्री की बातचीत में यह स्पष्ट है।

यीशु यहूदिया से सामरिया होकर गलील को जा रहा था (यूहन्ना 4)। यीशु का यह कार्य ही यहूदी परंपरा था।

उन दिनों में इस्राएल तीन भाग में विभाजित था। दक्षिण भाग यहूदिया, उत्तरी भाग गलील और बीच का भाग सामरिया। यहूदी अधिकांशतः यहूदिया और गलील में रहते थे। गलील वासियों के लिए यहूदिया जाने का सबसे आसान रास्ता सामरिया से होकर जाता था, किन्तु सामरी लोगों से घृणा करने के कारण यहूदी लोग विशेष करके रब्बी लोग सामरिया होकर याात्रा नहीं किया करते थे। वे सामरिया को छोड़ कर वास्तविक समय से दुगना समय खर्च कर दो बार यर्दन पार कर यहूदिया से गलील की ओर यात्रा करते थे। किन्तु यीशु नामक रब्बी परंपराओं के अधीन होने के लिये तैयार नहीं था।

यीशु की सामरिया होकर यात्रा में जो कुछ हुआ वह परंपराओं का उलंघन था। पहली बात, यीशु सामरिया होकर यात्रा करता है। दूसरा, यीशु एक सामरी व्यक्ति से पानी मांगता है। उन दिनों में जब यहूदी और सामरी आकिसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे। किसी यहूदी का किसी सामरी से पानी मांगना तो सोचने से भी परे था। "यहूदी लोग गाते फिरते

शेष पृष्ठ 15 पर...

What is the Meaning of Cross?

The Brutality of the Cross

Although the symbol of the cross appears in much pagan history prior to Jesus, the crucifixion cross has historical meaning due to the fact that crucifixion was a real, historical method of execution. As an instrument of death, the cross was detested by the Jews, so it became a stumbling block for them when considering Jesus. How could the Messiah be executed on a cross? After all, the Greek and Roman Empire executed thousands of criminals and captives in just this manner (Alexander the Great executed two thousand Tyrian captives in this way, after the fall of the city). This form of punishment was usually reserved for such crimes as treason, desertion, robbery, piracy, assassination, and other such crimes. It continued in the Roman empire until the day of Constantine, when it was abolished as an insult to Christianity.

How could God allow this type of horrific death to occur to His only Son? Why did Jesus have to die on the cross? What did he do that deserved this kind of death? Well, let's take a look at the Bible to follow the trail that will lead us to the truth!

The Cross Reconciles (Pays) Our Debt

The Bible recognizes the truth that all sin must be punished. After all, God is just. And justice requires that wrongs are punished. You know that is true even for us living here on earth. We have to obey the laws or be punished! And God has a set of holy commandments (laws) that must also be obeyed. So, it shouldn't surprise you that God requires this justice of us. The Bible also tells us that we could never pay the price for

our sin on our own. Our sin is punishable by death. So, the cross is the place where Jesus paid the price for us, and in doing so, he united us to God: Ephesians 2:14-16

The Cross is Where God Does ALL the Work

If we could pay our own penalty, we would eventually become proud and boastful, and confident in our own ability to live our lives apart from God. Maybe that's why God does all the work here. In the end, HIS effort to save us is all we can ever boast about, and God likes it that way. Maybe that's because He knows that we end up worshipping whatever we boast about. God wants to be the only object of our worship, so His work on the cross is the central focus of our faith: Galatians 6:12-16

The Cross Demonstrates the Power of God to Save Us

In the end, the cross is the ultimate demonstration of God's power. After all, we could never have accomplished our salvation on our own. But the cross can be confusing to many people around us who still want to live apart from God. For some of our friends, the idea of a God who would die on a cross fro us is simply crazy. It makes no sense from a worldly perspective! But that shouldn't surprise us. Scripture tells us that a God who loves us like that will blow our minds. That kind of love seems unreasonable, and foolish to those who really want to save themselves: 1 Corinthians 1:17-19

Some Won't Even Recognize the Cross

Maybe that's why non-believers think we're crazy sometimes. Maybe that's why people who want to try to work their way to heaven aren't usually seen wearing crosses around their neck (heck, Mormons won't even place the cross on their place of worship!). The cross is a symbol of God's power; of the work he did to save us. It is the focus of our pride and the symbol of our salvation.

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 11

नोट : सभी प्रश्न फिलिप्पियों के पत्री से लिये गये हैं।

1. पौलुस फिलिप्पी के लोगों को किन बातों को प्रिय जानने और मसीह के दिन तक क्या करने के लिये कहता है।
2. पौलुस पर जो बीता उससे क्या हुई है?
3. फिलिप्पी के विश्वासियों के चाल-चलन के विषय में पौलुस क्या सुनना चाहता है?
4. परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ को क्या करना है?
5. टेढ़े और हठीले लोगों के बीच हम कैसे परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रह सकते हैं?
6. तीमुथियुस का स्वभाव कैसा था?
7. पौलुस के अनुसार सिखनावाले कौन हैं?
8. किसके कारण पौलुस ने लाभ की बातों को हानि समझ लिया?
8. हमारा स्वदेश कहाँ पर है; और हम किसकी बाट जोह रहे हैं?
10. प्रभु में कैसे रहना है?

नियम और शर्तें :

- पहलियों के हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि अप्रैल 30 है।
- धर्मशास्त्र से मेल खानेवाले उत्तर ही मान्य होंगे। उत्तरों के साथ बाइबल संदर्भ देना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्नों के सही हल भेजने वाले ही विजेता घोषित किये जाएंगे।
- कृपया अपना नाम और पता साफ-साफ अक्षरों में लिखें।
- सभी हल पोस्टकार्ड पर लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजें।

-जीवन का मार्ग, पोस्ट बॉक्स् नं. 27, बिलासपुर - 495 001. छ.ग.

...परम्पराएँ और प्रथाएँ

थे कि जो व्यक्ति सामरी व्यक्ति से भोजन स्वीकार करेगा वह सुअर का मांस खानेवाले के समान है।" किन्तु यीशु यहूदी परंपराओं का उलंघन करता है।

एक और बात। यीशु यहाँ पर एक स्त्री से पानी मांग रहा है। यहूदी गुरु सार्वजनिक स्थलों पर किसी महिला से बात नहीं करते थे - फिर चाहे वह उसकी पत्नी या बहन ही क्यों न हो। किन्तु यीशु इस परंपरा को तोड़कर एक अन्जान, विजातीय स्त्री से सार्वजनिक स्थल पर बात कर रहा था।

सभी परंपराओं को तोड़कर जब यीशु सूखार शहर में एक स्त्री की खोज में पहुँचता है तो दुःखद बात यह थी कि वह यीशु के वचनों को अपनी परंपराओं द्वारा रोकने का प्रयास करती है।

सूखार शहर से लगभग एक किलोमीटर दूर याकूब का कुआँ था। जब यीशु सामरी स्त्री से पानी मांगता है तो उसे विश्वास नहीं होता। "क्या तू एक यहूदी होकर सामरी स्त्री से पानी मांगता है?" वह अपना सन्देह प्रगट करती है। किन्तु यीशु ने कहा, "परमेश्वर के वरदान के विषय में और उस व्यक्ति को जो तुझसे बात कर रहा है - पानी मांग रहा है, तू नहीं जानती है। यदि जानती होती तो तू उससे जीवन का जल मांगती और वह तुझे देता भी।"

सामरी स्त्री समझ नहीं पाती है कि जीवन का जल क्या है - अथवा वह उसे गलत रूप में समझती है। वह उसे भौतिक रीति से देखती है। वह पूछती है, कि हे स्वामी, तुम्हारे पास पानी भरने के लिये बर्तन नहीं है। कुआँ गहरा है, फिर कैसे तू मुझे जीवन का जल देगा?

शेष अगले अंक में...

रचनायें आमन्त्रित हैं!

मसीही जीवन में उन्नति देने योग्य कहानियाँ, लेख, कवितायें आदि आमन्त्रित हैं। परमेश्वर ने यदि आपको लेखनी के क्षेत्र में वरदान दिया है तो उसका उपयोग करें और अपनी रचनायें स्पष्ट अक्षरों में लिख कर भेजें। योग्य रचनायें अगले अंकों में प्रकाशित की जाएँगी।

शब्द पहेली

इस शब्द पहेली में बाइबल में वर्णित याकूब के बारह सन्तानों के नाम दिये गये हैं। उत्तर प्राप्त

क	च	फ	प	दी	त	इ	फ
प	सु	र्त	व	य	ना	स	मु
यू	च	रू	अ	ब्र	हू	या	ब
ज	दा	वि	बे	क्ष	ली	दा	न
ले	छ	प	श	न	ठ	लू	प्ता
वी	या	ल	मो	स	बू	ही	ली
ग	वि	शि	ज	ज	ह्न	की	फ
भ	शी	कु	गा	द	ठा	रू	ऋ
ह	रू	न	आ	इ	त	छ	उ
व	द	ड	ठ	शे	ल	ने	फ
ल	मैं	इ	स्सा	का	र	फ	ण

करने के लिये उत्पत्ति 29:31- 30:24 पढ़कर उन्हें बायें से दायें, ऊपर से नीचे और आड़ी दिशा में ढूंढ़िये।

मूसा

परमेश्वर मूसा को बुलाता है

जवान होने के बाद, एक दिन मूसा ने देखा कि एक मिस्री जन एक इब्री को मार रहा है। जब उसने उसे रोकने का प्रयास किया, तो मिस्री जन मार डाला गया। इस कारण मूसा मिस्र से दूर भाग गया।

मूसा बहुत वर्षों तक एक चरवाहा बना रहा। एक दिन वह होरेब पहाड़ पर भेड़ों को चरा रहा था। अचानक परमेश्वर ने एक जलती हुई कंटीली झाड़ी के बीच में उसे दर्शन दिया।

परमेश्वर ने मूसा से बात की। उसने उसे अपने पाँवों से जूतियों को उतार ने के लिये कहा क्योंकि जिस स्थान पर वह खड़ा था वह पवित्र भूमि था। तब उसने मूसा से कहा कि उसे मिस्र वापस जाकर इब्री लोगों को गुलामी से छुड़ाना है।

मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूँ जो फिरौन के पास जाऊँ और इस्राएलियों को मिस्र से जाने देने के लिये मना सकूँ, और अगर ऐसा करता भी हूँ, तो तू क्यों सोचता है कि वे मेरे पीछे हो लेंगे। वे क्यों मुझ पर भरोसा करेंगे?

परमेश्वर ने कहा, अपनी लाठी भूमि पर डाल दे। मूसा ने वैसा ही किया और तब वह सर्प बन गया। तब परमेश्वर ने कहा, अब पूँछ पकड़ कर उसे उठा ले। मूसा ने ऐसा ही किया और सर्प पुनः लाठी बन गई!

इन चिन्हों के साथ मूसा ने अन्ततः विश्वास किया कि परमेश्वर सदा उसकी सहायता के लिये उसके साथ रहेगा कि वह हर उस कठिन कार्य को कर सके जो परमेश्वर उसे करने के लिये कहेगा।

उपलब्ध पुस्तकें

10 से अधिक प्रतियों पर विशेष छूट!!

100/-

70/-

50/-

40/-

40/-

25/-

मुफ्त

मुफ्त

प्रतियाँ प्राप्त करने के लिये संपर्क करें -

Sanctuary Literature Service
P.B. N0. 27, Bilaspur, C.G- 495 001.
Cell Phone : +91 94255 49016